

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में मिश्रित शिक्षण के प्रति स्वीकृति और दृष्टिकोण: हजारीबाग जिले के संदर्भ में एक सैद्धांतिक अध्ययन

निशा कुमारी¹, डॉ० विजय कुमार गुप्ता²

शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, साई नाथ यूनिवर्सिटी, रांची, झारखंड¹

शोध निर्देशक, एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, साई नाथ यूनिवर्सिटी, रांची, झारखंड²

सार

यह सैद्धांतिक अध्ययन हजारीबाग जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शिक्षक शिक्षकों के बीच मिश्रित शिक्षण के प्रति स्वीकृति और दृष्टिकोण की अवधारणाओं की खोज करता है। मिश्रित शिक्षण, एक शैक्षिक नवाचार के रूप में, पारंपरिक शिक्षण मानसिकता और शिक्षण रणनीतियों में परिवर्तन की मांग करता है। यह पत्र प्रौद्योगिकी स्वीकृति मॉडल (TAM) और नियोजित व्यवहार के सिद्धांत (TPB) जैसे स्थापित सिद्धांतों पर आधारित है, ताकि यह समझा जा सके कि संज्ञानात्मक, भावनात्मक और संदर्भात्मक कारक शिक्षक शिक्षकों के मिश्रित शिक्षण के प्रति प्रतिक्रियाओं को कैसे प्रभावित करते हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य एक वैचारिक ढांचा प्रदान करना है जो शिक्षक शिक्षा में मिश्रित शिक्षण को एकीकृत करने के लिए भविष्य के अनुसंधानों और प्रथाओं का मार्गदर्शन कर सके।

1. परिचय

मिश्रित शिक्षण एक शैक्षिक दृष्टिकोण जो पारंपरिक आने-सामने की शिक्षा को डिजिटल और ऑनलाइन शिक्षण विधियों के साथ जोड़ता है 21वीं सदी की शैक्षिक प्रणाली में एक परिवर्तनकारी मॉडल के रूप में उभरा है। यह मिश्रित तरीका परंपरागत कक्षा शिक्षण और आधुनिक तकनीकी प्रगति दोनों की ताकतों को जोड़कर एक अधिक प्रभावी, सुलभ और आकर्षक शिक्षण वातावरण बनाने का प्रयास करता है। ऐसा करके यह न केवल शिक्षण प्रक्रिया की लचीलापन बढ़ाता है, बल्कि व्यक्तिगत सीखने को प्रोत्साहित करता है, स्व-गति से प्रगति को बढ़ावा देता है, और शिक्षकों तथा शिक्षार्थियों दोनों में आवश्यक डिजिटल साक्षरता कौशल विकसित करता है। शिक्षक शिक्षा के संदर्भ में, मिश्रित शिक्षण का विशेष महत्व है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय भविष्य के शिक्षकों को तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिन्हें विभिन्न शिक्षण रणनीतियों, विशेष रूप से तकनीकी सहायता प्राप्त विधियों, का उपयोग करने में दक्ष होना आवश्यक है। इसलिए, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मिश्रित

शिक्षण को शामिल करना केवल एक शैक्षिक विकल्प नहीं है कृयह वैश्विक शिक्षा मानकों और डिजिटल परिवर्तन के अनुरूप एक अनिवार्यता है।

हालाँकि, झारखंड के हजारीबाग जिले जैसे अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में मिश्रित शिक्षण के क्रियान्वयन के सामने विशेष चुनौतियाँ और अवसर हैं। इन क्षेत्रों में अक्सर अवसंरचनात्मक सीमाएँ, अस्थिर इंटरनेट कनेक्टिविटी, उपकरणों की सीमित पहुँच, और शिक्षक एवं छात्रों के बीच डिजिटल दक्षता के विभिन्न स्तर पाए जाते हैं। ऐसे संदर्भात्मक प्रतिबंधों के बीच, शिक्षक शिक्षकों के बीच मिश्रित शिक्षण को स्वीकार करने की इच्छा और उनके दृष्टिकोण इसकी सफलता के महत्वपूर्ण निर्धारक बन जाते हैं। तकनीक को अपनाने की उनकी तत्परता, नई शिक्षण विधियों के प्रति अनुकूलनशीलता, और इसके लाभों की उनकी धारणा इन पहलों की सफलता को गहराई से प्रभावित करती है। इस अध्ययन की सैद्धांतिक आधारशिला मनोवैज्ञानिक और संरचनात्मक दोनों दृष्टिकोणों में निहित है। मनोवैज्ञानिक रूप से यह प्रेरणा, आत्म-प्रभावकारिता, नवाचार के प्रति खुलापन, तथा प्रौद्योगिकी के उपयोग में सहजता और उपयोगिता की धारणा जैसे व्यक्तिगत कारकों की जांच करता है। संरचनात्मक दृष्टिकोण से यह संस्थागत समर्थन प्रणालियों, संसाधनों की उपलब्धता, प्रशासनिक प्रोत्साहन, और नीति रूपरेखाओं की पड़ताल करता है जो मिश्रित शिक्षण को अपनाने में सहायता या बाधा बनती हैं। इन घटकों के विश्लेषण के माध्यम से, अध्ययन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शिक्षकों की तत्परता और उनके मिश्रित शिक्षण अभ्यासों में सार्थक भागीदारी को प्रभावित करने वाले कारकों की व्यापक समझ प्रदान करने का प्रयास करता है।

अंततः, यह शोध कम शहरीकृत क्षेत्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं और परिस्थितियों को उजागर करके शिक्षा में डिजिटल समावेशन के व्यापक विमर्श में योगदान देने का लक्ष्य रखता है। यह नीति निर्माता, पाठ्यक्रम विकासकर्ता, और शैक्षिक संस्थानों जैसे हितधारकों को उन रणनीतियों के बारे में सूचित करने का प्रयास करता है जो शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में मिश्रित शिक्षण के सफल प्रसार और विकास के लिए अनुकूल वातावरण तैयार कर सकें।

2. सैद्धांतिक ढांचा

2.1 प्रौद्योगिकी स्वीकृति मॉडल

प्रौद्योगिकी स्वीकृति मॉडल, जिसे डेविस ने 1989 में प्रस्तुत किया था, यह समझने के लिए एक सैद्धांतिक ढांचा प्रदान करता है कि व्यक्ति नई तकनीकों को कैसे स्वीकार करते हैं और उनका उपयोग

करते हैं। इस मॉडल के अनुसार, उपयोगकर्ताओं के निर्णय को दो मुख्य कारक प्रभावित करते हैं—प्रत्याशित उपयोगिता और प्रत्याशित उपयोग में आसानी।

प्रत्याशित उपयोगिता उस हद तक होती है जिसमें व्यक्ति यह विश्वास करता है कि किसी विशेष प्रणाली का उपयोग करने से उसके कार्य प्रदर्शन में सुधार होगा, जबकि प्रत्याशित उपयोग में आसानी उस विश्वास को दर्शाती है कि वह प्रणाली उपयोग करने में सरल और बिना कठिनाई के होगी। शिक्षक शिक्षा के संदर्भ में, प्रौद्योगिकी स्वीकृति मॉडल यह समझने में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि शिक्षक मिश्रित शिक्षण के साथ कैसे जुड़ते हैं। यदि शिक्षक शिक्षकों को मिश्रित शिक्षण प्लेटफॉर्म और रणनीतियाँ अपने शिक्षण प्रभावशीलता के लिए लाभकारी लगती हैं और वे उन्हें अपने वर्तमान शिक्षण अभ्यास में सहजता से एकीकृत कर सकते हैं, तो वे उन्हें अपनाने और निरंतर उपयोग करने की अधिक संभावना रखते हैं। इस प्रकार, जहाँ शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में मिश्रित शिक्षण के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण और स्वीकृति स्तरों का मूल्यांकन करने के लिए एक आधारभूत मॉडल के रूप में कार्य करता है।

2.2 नियोजित व्यवहार का सिद्धांत

नियोजित व्यवहार का सिद्धांत, जिसे अजजन ने विकसित किया है, यह तर्कसंगत कार्रवाई के सिद्धांत पर आधारित है लेकिन इसमें एक अतिरिक्त घटक कृ प्रत्याशित व्यवहार नियंत्रण कृ को शामिल करके मानव व्यवहार की बेहतर भविष्यवाणी और समझ प्रदान करता है। जहाँ तीन मुख्य कारकों की पहचान करता है जो किसी व्यक्ति की किसी व्यवहार को करने की मंशा को प्रभावित करते हैं—व्यवहार के प्रति दृष्टिकोण, जो उस व्यवहार को करने के सकारात्मक या नकारात्मक मूल्यांकन को दर्शाता है; सामाजिक मानदंड, जो दूसरों से महसूस किए गए सामाजिक दबाव या अपेक्षाओं को दर्शाते हैं; और प्रत्याशित व्यवहार नियंत्रण, जो उपलब्ध संसाधनों और आत्म-प्रभावकारिता के आधार पर व्यक्ति के लिए व्यवहार करना कितना आसान या कठिन है, इसका आकलन होता है।

हजारों के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के विशिष्ट संदर्भ में, टीपीबी शिक्षकों की मिश्रित शिक्षण को अपनाने की इच्छा का विश्लेषण करने के लिए उपयोगी दृष्टिकोण प्रदान करता है। शिक्षक की डिजिटल शिक्षण विधियों को अपनाने की मंशा पर उनकी तकनीकी-संवर्धित शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, सहकर्मियों और संस्थागत नेतृत्व से प्राप्त प्रोत्साहन या दबाव, तथा डिजिटल उपकरणों और प्लेटफॉर्मों का प्रभावी उपयोग करने की अपनी क्षमता में विश्वास गहरा प्रभाव डालता है। यह सिद्धांत अर्ध-शहरी और ग्रामीण सेटिंग्स में शिक्षकों के बीच तकनीक को अपनाने को प्रभावित करने वाले मनोवैज्ञानिक और सामाजिक आयामों को समझने में मदद करता है।

2.3 संरचनावादी शिक्षण सिद्धांत

संरचनावादी शिक्षण सिद्धांत, जिसे शिक्षा के सिद्धांतकारों जैसे पियाजे और वार्डगोत्स्की के कार्यों में निहित पाया जाता है, यह जोर देता है कि ज्ञान सक्रिय रूप से शिक्षार्थियों द्वारा निर्मित होता है, न कि केवल निष्क्रिय रूप से ग्रहण किया जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार, सार्थक सीखने की प्रक्रिया तब होती है जब व्यक्ति विषय वस्तु के साथ सक्रिय रूप से जुड़ते हैं, उसे अपने पूर्व ज्ञान से जोड़ते हैं, और वास्तविक दुनिया के संदर्भों में लागू करते हैं।

मिश्रित शिक्षण, जो पारंपरिक आमने-सामने की शिक्षा को डिजिटल और ऑनलाइन उपकरणों के साथ जोड़ता है, इन संरचनावादी सिद्धांतों के साथ घनिष्ठ रूप से मेल खाता है। यह एक गतिशील और अंतःक्रियात्मक शिक्षण वातावरण तैयार करता है जहाँ शिक्षार्थियों को खोजने, प्रयोग करने और विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। डिजिटल घटक संसाधनों, मल्टीमीडिया सामग्री, और स्व-गति से सीखने के अवसरों तक पहुँच प्रदान करता है, जिससे छात्र अपनी सीखने की प्रक्रिया पर अधिक नियंत्रण पा सकते हैं। साथ ही, कक्षा में व्यक्तिगत सत्र चर्चा, सहयोग, और शिक्षक मार्गदर्शन को सुविधाजनक बनाते हैं, जो अवधारणाओं को स्पष्ट करने और उच्च स्तरीय सोच को प्रोत्साहित करने के लिए आवश्यक हैं।

शिक्षक शिक्षा में, संरचनावादी दृष्टिकोण छात्र-शिक्षकों को वास्तविक शिक्षण परिदृश्यों में रखकर उनकी आलोचनात्मक सोच, समस्या समाधान क्षमता, और पेशेवर कौशल के विकास को प्रोत्साहित करता है। वे केवल सूचना के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं होते, बल्कि अपनी स्वयं की सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनते हैं। मिश्रित शिक्षण के माध्यम से, शिक्षक प्रशिक्षु अपनी शिक्षण प्रथाओं पर विचार कर सकते हैं, विभिन्न दृष्टिकोणों के साथ संवाद कर सकते हैं, और सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक परिवेश में लागू कर सकते हैं। ऑनलाइन मंच और सहयोगी उपकरण सहकर्मी-से-सहकर्मी सीखने को भी बढ़ावा देते हैं और साझा समझ के निर्माण को प्रोत्साहित करते हैं।

इसके अतिरिक्त, संरचनावादी शिक्षण में शिक्षार्थी के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ को महत्व दिया जाता है, जिसे मिश्रित शिक्षण लचीले, व्यक्तिगत, और संदर्भ-संवेदनशील अनुभव प्रदान करके संबोधित कर सकता है। विशेष रूप से हजारिबाग जैसे अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में, जहाँ संसाधनों तक पहुँच सीमित हो सकती है, मिश्रित शिक्षण एक शक्तिशाली मंच प्रदान करता है जो अंतराल को पाटता है और समावेशी, शिक्षार्थी-केंद्रित वातावरण बनाता है जो संरचनावादी आदर्शों का प्रतिनिधित्व करता है।

3. स्वीकार्यता और दृष्टिकोण के सैद्धांतिक आयाम

3.1 संज्ञानात्मक आयाम

संज्ञानात्मक आयाम उन मानसिक प्रक्रियाओं, समझ, ज्ञान और विश्वास प्रणालियों को दर्शाता है जो किसी शिक्षक के मिश्रित शिक्षण के प्रति धारणा और स्वीकार्यता को आकार देते हैं। यह इस बात में मूलभूत भूमिका निभाता है कि शिक्षक नए शिक्षण तरीकों को कैसे व्याख्यायित, मूल्यांकन और अंततः अपनाते हैं। जब शिक्षक मिश्रित शिक्षण की गहन अवधारणा रखते हैं और इसके छात्रों की संलग्नता, सीखने के परिणामों और कक्षा में अंतःक्रिया को बढ़ाने की संभावनाओं को पहचानते हैं, तो वे इसे अपने शिक्षण अभ्यासों में आत्मविश्वास के साथ शामिल करने की अधिक संभावना रखते हैं।

उनके डिजिटल उपकरणों की प्रभावशीलता, प्रासंगिकता और व्यवहारिकता के प्रति विश्वास उनके ऐसे नवाचारों को अपनाने और प्रयोग करने की इच्छा को गहराई से प्रभावित करता है। एक शिक्षक जो मिश्रित शिक्षण को विभेदित शिक्षण का समर्थन करने, सहयोगी शिक्षण को सुविधाजनक बनाने, और समय पर प्रतिक्रिया प्रदान करने का एक मूल्यवान साधन मानता है, वह संज्ञानात्मक रूप से इसे सकारात्मक दृष्टिकोण से देखता है। इसके विपरीत, डिजिटल शिक्षण के बारे में सीमित जागरूकता या गलत धारणाएँ जैसे यह मानना कि यह कठोरता की कमी है या शिक्षक-छात्र के संवाद को कम करता है स्वीकार्यता में संज्ञानात्मक बाधाएं बन सकती हैं। हजारीबाग के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के संदर्भ में, जहां आधुनिक शिक्षण तकनीकों की जानकारी भिन्न हो सकती है, शिक्षकों की संज्ञानात्मक तैयारी को बढ़ाना आवश्यक है। व्यावसायिक विकास कार्यक्रम, कार्यशालाएं और सफल मिश्रित शिक्षण मॉडलों के निरंतर संपर्क से शिक्षकों के सूचित विश्वासों का निर्माण हो सकता है और संज्ञानात्मक जुड़ाव को बढ़ावा मिल सकता है।

इसके अतिरिक्त, एक शिक्षक के लिए यह जानना कि प्रभावी मिश्रित पाठ कैसे डिजाइन और प्रस्तुत किए जाएँ जैसे उचित डिजिटल प्लेटफॉर्म का चयन, संवादात्मक सामग्री बनाना, और ऑनलाइन तथा ऑफलाइन घटकों को सीखने के उद्देश्यों के अनुरूप संरेखित करना कृभी संज्ञानात्मक आयाम का महत्वपूर्ण हिस्सा है। जब शिक्षक न केवल यह समझते हैं कि मिश्रित शिक्षण क्या है, बल्कि यह भी कि इसे कैसे और क्यों अपनाना चाहिए, तो वे गहरी शिक्षाशास्त्रीय दृढ़ता विकसित करते हैं। यह समझ उन्हें प्रौद्योगिकी को अपनी शिक्षण लक्ष्यों के पूरक रूप में सोच-समझकर समाहित करने के लिए सक्षम बनाती है। इसलिए, संज्ञानात्मक आयाम केवल उपकरणों से परिचय का विषय नहीं है, बल्कि मिश्रित शिक्षण के पीछे के शिक्षाशास्त्रीय तर्क और शैक्षिक मूल्य को आत्मसात करने का भी विषय है।

3.2 भावनात्मक आयाम

भावनात्मक आयाम शिक्षकों की मिश्रित शिक्षण के प्रति भावनात्मक और दृष्टिकोण संबंधी प्रतिक्रियाओं को समाहित करता है। ये प्रतिक्रियाएँ इस बात में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं कि शिक्षक नई तकनीकी-सम्पन्न शिक्षण पद्धतियों को किस प्रकार अपनाते और उपयोग करते हैं। उत्साह, जिज्ञासा, प्रेरणा, या संतोष जैसी भावनाएँ शिक्षकों की मिश्रित शिक्षण रणनीतियों को खोजने और लागू करने की इच्छा को काफी बढ़ा सकती हैं। जब शिक्षक डिजिटल उपकरणों के प्रति उत्साहित या सकारात्मक रूप से प्रेरित महसूस करते हैं और उन्हें अपने शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने वाला समझते हैं, तो वे इन्हें कक्षा में अपनाने और प्रयोग करने के लिए अधिक प्रवृत्त होते हैं। तकनीक का सफलतापूर्वक उपयोग करने पर मिलने वाली संतुष्टि और उपलब्धि की भावना भी सकारात्मक भावनात्मक जुड़ाव को मजबूत करती है। इसके विपरीत, भय, चिंता, हताशा, या प्रतिरोध जैसी नकारात्मक भावनाएँ मानसिक बाधाएं पैदा कर सकती हैं जो मिश्रित शिक्षण को अपनाने में रुकावट बनती हैं। जो शिक्षक तकनीकी परिवर्तनों से अभिभूत महसूस करते हैं या अपनी डिजिटल क्षमताओं पर विश्वास नहीं रखते, वे असफलता या छात्रों के सामने शर्मिंदगी का भय विकसित कर सकते हैं। यह भावनात्मक असहजता हजारिबाग जैसे क्षेत्रों में, जहां डिजिटल संसाधनों और प्रशिक्षण की नियमित उपलब्धता सीमित हो सकती है, मिश्रित शिक्षण को अपनाने में हिचकिचाहट या अस्वीकृति का कारण बन सकती है। शिक्षकों की भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ अक्सर उनके पिछले तकनीकी अनुभवों, सहकर्मियों और संस्थानों के समर्थन, और उनके पेशेवर पहचान की भावना से प्रभावित होती हैं।

प्रेरणा भी भावनात्मक आयाम में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आंतरिक प्रेरणाकृजो नवाचार करने या छात्रों के परिणाम सुधारने की इच्छा से प्रेरित होती है शिक्षकों को सक्रिय रूप से मिश्रित शिक्षण के तरीकों को खोजने और लागू करने के लिए सक्षम बनाती है। दूसरी ओर, यदि केवल बाहरी दबाव या उपर से आये निर्देश प्रेरक हों, बिना भावनात्मक तत्परता के, तो शिक्षक अनिच्छा से पालन कर सकते हैं, बिना वास्तविक जुड़ाव के। भावनात्मक लचीलापन विकसित करना और ऐसा सहायक वातावरण बनाना जहाँ शिक्षक अपनी चिंताएं व्यक्त कर सकें, अनुभव साझा कर सकें, और सफलताओं का उत्सव मना सकें, सकारात्मक भावनात्मक प्रतिक्रियाओं के पोषण के लिए आवश्यक है। शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में परिवर्तन प्रबंधन के भावनात्मक पहलुओं को स्वीकार करना और उनका समाधान करना अनिवार्य है। प्रयोग की संस्कृति को बढ़ावा देना, भावनात्मक और तकनीकी सहायता प्रदान करना, और शिक्षकों के प्रयासों को मान्यता देना चिंता को कम करने और मिश्रित शिक्षण के प्रति अधिक उत्साही तथा आत्मविश्वासी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करने में मदद करता है। अंततः, भावनात्मक आयाम न

केवल मिश्रित शिक्षण को अपनाने के निर्णय को प्रभावित करता है बल्कि इसकी स्थायी और गहरी एकीकरण प्रक्रिया को भी प्रभावित करता है।

3.3 व्यवहारिक इच्छा

व्यवहारिक इच्छा का तात्पर्य है कि शिक्षक का सचेत निर्णय या तत्परता, जिसमें वह अपने शिक्षण में मिश्रित शिक्षण को अपनाने और लागू करने के लिए तैयार होता है। यह आयाम तकनीकी स्वीकृति मॉडल और नियोजित व्यवहार सिद्धांत के ढांचों पर आधारित है और विभिन्न संज्ञानात्मक, भावनात्मक तथा संदर्भगत प्रभावों का समामेलन होता है। जब कोई शिक्षक डिजिटल उपकरणों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखता है, उनकी उपयोगिता में विश्वास करता है, और उन्हें प्रयोग करने में आत्मविश्वास महसूस करता है, तो वह मिश्रित शिक्षण की रणनीतियों को अपनाने की मजबूत इच्छा बनाता है। यह इच्छा वास्तविक व्यवहार का एक महत्वपूर्ण पूर्वानुमानक होती है, जो सोच और क्रिया के बीच सेतु का काम करती है। शिक्षकों की व्यवहारिक इच्छा न केवल उनके व्यक्तिगत विश्वासों और भावनाओं से प्रभावित होती है, बल्कि बाहरी परिस्थितियों जैसे संस्थागत समर्थन, संसाधनों की उपलब्धता, प्रशिक्षण के अवसर, और सहकर्मियों के प्रभाव से भी निर्धारित होती है। उदाहरण के लिए, हजारिबाग के शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेजों में यदि शिक्षक यह महसूस करते हैं कि उनके साथी सफलतापूर्वक मिश्रित शिक्षण विधियों का उपयोग कर रहे हैं और प्रबंधन डिजिटल उपकरणों के साथ प्रयोग को प्रोत्साहित करता है, तो यह उनकी व्यवहारिक इच्छा को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। इसके विपरीत, तकनीकी सहायता की कमी या आलोचना के डर से यह इच्छा कमजोर हो सकती है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि व्यवहारिक इच्छा शिक्षक की योजना बनाने, आरंभ करने, और मिश्रित शिक्षण प्रथाओं को जारी रखने की तत्परता को दर्शाती है। यह केवल अस्थायी उपयोग या अनुपालन से परे जाकर डिजिटल तरीकों को शिक्षण-शिक्षण प्रक्रिया में समेकित करने की जागरूक प्रतिबद्धता को दर्शाती है। यह गतिशील भी होती है कृसकारात्मक अनुभवों से मजबूत हो सकती है या निरंतर समस्याओं के कारण कमजोर पड़ सकती है। व्यवहारिक इच्छा को बढ़ावा देने के लिए व्यावसायिक विकास, मार्गदर्शन, मान्यता, और रचनात्मक प्रतिक्रिया सहित एक सहायक पारिस्थितिकी तंत्र की आवश्यकता होती है। संक्षेप में, व्यवहारिक इच्छा केवल एक सैद्धांतिक संकल्पना नहीं बल्कि शिक्षकों के मिश्रित शिक्षण को अपनाने की संभावना का व्यावहारिक माप है। इस इच्छा को समझना और प्रोत्साहित करना सफल कार्यान्वयन के लिए आवश्यक है, खासकर उन अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ शिक्षकों को डिजिटल परिवर्तन की दिशा में पहला कदम उठाने के लिए अतिरिक्त प्रोत्साहन और संसाधनों की आवश्यकता हो सकती है।

4. हजारिबाग के संदर्भ में प्रासंगिकता

हजारिबाग जैसे जिलों में, जहाँ शैक्षिक संस्थान अक्सर अवसंरचनात्मक और तकनीकी सीमाओं का सामना करते हैं, मिश्रित शिक्षण की स्वीकृति का सैद्धांतिक समझना विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है। शिक्षकों की मिश्रित शिक्षण को अपनाने की तत्परता केवल उनके व्यक्तिगत आराम या तकनीक से परिचित होने पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इसमें कई अन्य जटिल कारक भी प्रभाव डालते हैं। सामाजिक मानदंड, संस्थागत नीतियाँ, प्रासंगिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की उपलब्धता, और विश्वसनीय डिजिटल अवसंरचना तक पहुँच सभी शिक्षकों के दृष्टिकोण और व्यवहार को डिजिटल उपकरणों को अपने शिक्षण में समाहित करने के संदर्भ में प्रभावित करते हैं। ऐसे अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीण-शहरी विभाजन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक अक्सर अपने शहरी समकक्षों की तुलना में आधुनिक तकनीक के प्रति कम परिचित होते हैं। तकनीकी परिचय में यह अंतर उनकी आत्मविश्वास और मिश्रित शिक्षण को प्रभावी रूप से लागू करने की तत्परता को प्रभावित कर सकता है। साथ ही, सामाजिक-आर्थिक कारक शिक्षकों और छात्रों दोनों को प्रभावित करते हैं, जिससे उपकरणों, इंटरनेट कनेक्टिविटी, और कक्षा के बाहर सहायक शिक्षण वातावरण तक पहुँच पर प्रभाव पड़ता है।

संस्थागत समर्थन प्रणाली भी मिश्रित शिक्षण पहलों की सफलता निर्धारित करने में उतनी ही महत्वपूर्ण होती है। ऐसे स्कूल और शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेज जो उचित अवसंरचना, नियमित व्यावसायिक विकास, तकनीकी सहायता, और प्रोत्साहन प्रदान करते हैं, वे शिक्षकों में मिश्रित शिक्षण के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण और स्वीकृति को बढ़ावा देते हैं। इसके विपरीत, इन समर्थन की कमी प्रतिरोध या सतही अपनाने का कारण बन सकती है। इस प्रकार, इन संदर्भगत कारकों कृ ग्रामीण बनाम शहरी असमानताएं, तकनीकी परिचय के स्तर, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, और संस्थागत ढाँचे की मजबूती कृ को समझना हजारिबाग में मिश्रित शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए प्रभावी रणनीतियाँ तैयार करने के लिए आवश्यक है। इन वास्तविकताओं को ध्यान में रखकर हस्तक्षेप डिजाइन करने से असमानताओं को पाटने, शिक्षकों की प्रेरणा और क्षमताओं को बढ़ाने, और अंततः इस क्षेत्र में मिश्रित शिक्षण के माध्यम से शिक्षा की गुणवत्ता और पहुँच में सुधार करने में मदद मिलेगी।

5. स्वीकृति में चुनौतियाँ

मिश्रित शिक्षण की व्यापक स्वीकृति और प्रभावी कार्यान्वयन में कई चुनौतियाँ बाधा डालती हैं, खासकर हजारिबाग जैसे क्षेत्रों में। सबसे महत्वपूर्ण बाधाओं में से एक है डिजिटल विभाजन, जिसका अर्थ है डिजिटल उपकरणों और विश्वसनीय इंटरनेट कनेक्टिविटी तक निरंतर पहुँच का अभाव। इन आवश्यक

संसाधनों के बिना, शिक्षक और छात्र दोनों को मिश्रित शिक्षण के ऑनलाइन घटकों के साथ जुड़ने में कठिनाइयाँ होती हैं। एक अन्य बड़ी चुनौती है तकनीकी चिंता, जहाँ शिक्षक नए डिजिटल प्लेटफार्मों और उपकरणों का उपयोग करते समय भय, असहजता या आत्मविश्वास की कमी महसूस करते हैं। यह चिंता सीमित पूर्व अनुभव, गलतियाँ करने के डर, या शिक्षण के दौरान तकनीकी समस्याओं को लेकर चिंता से उत्पन्न हो सकती है। पर्याप्त प्रशिक्षण का अभाव भी एक महत्वपूर्ण बाधा है। कई शिक्षकों को मिश्रित शिक्षण के लिए विशेष रूप से निर्देशात्मक डिजाइन के सिद्धांतों का सीमित परिचय होता है, जिससे ऑनलाइन और ऑफलाइन शिक्षण विधियों को प्रभावी ढंग से जोड़ने में कठिनाई होती है। उचित प्रशिक्षण के बिना, शिक्षक आकर्षक और शैक्षिक रूप से सटीक मिश्रित पाठ तैयार करने में संघर्ष कर सकते हैं।

परिवर्तन का प्रतिरोध भी स्वीकृति को प्रभावित करने वाला एक कारक है। कुछ शिक्षक परिचितता, आराम या डिजिटल विधियों की प्रभावशीलता को लेकर संदेह के कारण पारंपरिक आमने-सामने की शिक्षण पद्धति को प्राथमिकता देते हैं। यह हिचक स्वीकृति की गति को धीमा कर सकती है और मिश्रित शिक्षण की परिवर्तनकारी क्षमता को सीमित कर सकती है। अंत में, नीति और प्रशासनिक बाधाएं भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। स्थानीय या संस्थागत स्तर पर मजबूत और स्पष्ट नीति ढाँचे की अनुपस्थिति अक्सर मिश्रित शिक्षण पहलों के लिए दिशा, समर्थन और जवाबदेही की कमी का कारण बनती है। मजबूत नीतियों और प्रशासनिक समर्थन के बिना, मिश्रित शिक्षण को समेकित और स्थायी रूप से लागू करना कठिन हो सकता है। इन चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक है ताकि हजारों और इसी प्रकार के संदर्भों में शिक्षकों द्वारा मिश्रित शिक्षण को अपनाने और प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए एक अनुकूल वातावरण बनाया जा सके।

6. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के लिए निहितार्थ

सैद्धांतिक ढाँचे से प्राप्त कई महत्वपूर्ण निहितार्थ शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के लिए उत्पन्न होते हैं, जो मिश्रित शिक्षण को प्रभावी ढंग से बढ़ावा देना चाहते हैं। सबसे पहले, प्रशिक्षण कार्यक्रम इस तरह से डिजाइन किए जाने चाहिए कि वे तकनीकी कौशल और शैक्षणिक दक्षताओं दोनों का विकास करें। शिक्षकों को डिजिटल उपकरणों के साथ व्यावहारिक अनुभव के साथ-साथ यह मार्गदर्शन भी मिलना चाहिए कि इन उपकरणों को अपने शिक्षण रणनीतियों में कैसे सार्थक रूप से सम्मिलित किया जाए ताकि छात्र के सीखने के परिणाम बेहतर हो सकें। दूसरे, संस्थागत नेतृत्व मिश्रित शिक्षण को अपनाने के लिए सकारात्मक वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नेतृत्व को निरंतर प्रेरणा प्रदान करनी चाहिए, प्रोत्साहन बनाना चाहिए, और तकनीकी तथा भावनात्मक समर्थन देते रहना चाहिए ताकि

शिक्षक तकनीकी चिंता और परिवर्तन के प्रति विरोध को पार कर सकें। प्रयोग की संस्कृति को प्रोत्साहित करना और शिक्षकों के प्रयासों को स्वीकार करना उनके आत्मविश्वास और मिश्रित शिक्षण को अपनाने की इच्छा को काफी बढ़ा सकता है। अंत में, नीतिगत पहलें संस्थागत और क्षेत्रीय दोनों स्तरों पर इस बात पर केंद्रित होनी चाहिए कि सभी शिक्षकों और छात्रों के लिए डिजिटल संसाधनों की समान पहुँच सुनिश्चित की जाए। इसमें विश्वसनीय अवसंरचना, किफायती उपकरण, और इंटरनेट कनेक्टिविटी प्रदान करना शामिल है। इसके अतिरिक्त, नीतियों को समावेशी डिजिटल शिक्षाशास्त्र को बढ़ावा देना चाहिए जो विविध सीखने की आवश्यकताओं और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखे, ताकि मिश्रित शिक्षण के लाभ शिक्षा समुदाय के सभी वर्गों तक पहुँच सकें। इन पहलुओं को संबोधित करके, शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान एक ऐसा सहायक ढाँचा तैयार कर सकते हैं जो न केवल मिश्रित शिक्षण को अपनाने में मदद करता है, बल्कि इसके प्रभावी कार्यान्वयन को समय के साथ स्थायी भी बनाता है।

7. निष्कर्ष

शिक्षकों के मिश्रित शिक्षण को अपनाने और उनके रुझान को सैद्धांतिक दृष्टिकोण से समझना शैक्षिक नवाचार और परिवर्तन को प्रभावित करने वाले बहुआयामी कारकों पर मूल्यवान और सूक्ष्म अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। टेक्नोलॉजी एक्सेप्टेंस मॉडल (TAM) और थ्योरी ऑफ प्लान्ड बिहेवियर (TPB) जैसे मॉडल्स के समन्वय से हम न केवल शिक्षकों की तकनीक को अपनाने की इच्छा के संज्ञानात्मक और भावात्मक आयामों का व्यापक विश्लेषण कर सकते हैं, बल्कि उनके व्यवहारिक इरादों को आकार देने वाले सामाजिक और संदर्भगत कारकों को भी समझ सकते हैं। ये फ्रेमवर्क इस बात को उजागर करते हैं कि प्रयोक्ता की उपयोगिता की धारणा, उपयोग में आसानी, सामाजिक प्रभाव और नियंत्रित करने की धारणा कितनी महत्वपूर्ण है, और ये सभी मिलकर तय करते हैं कि मिश्रित शिक्षण को सफलतापूर्वक कितना अपनाया जा सकता है।

हजारिबाग जिले जैसे क्षेत्र में, जहां अवसंरचनात्मक चुनौतियाँ और सामाजिक-आर्थिक असमानताएं महत्वपूर्ण बाधाएं प्रस्तुत करती हैं, मिश्रित शिक्षण शिक्षा के अंतर को पाटने और शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता तथा पहुँच को बढ़ाने का एक आशाजनक मार्ग प्रदान करता है। इन सैद्धांतिक मॉडलों के प्रयोग से नीति निर्धारक और शिक्षक इस अर्ध-शहरी और ग्रामीण परिवेश के लिए विशिष्ट बाधाओं और प्रेरक तत्वों को बेहतर समझ सकते हैं। यह समझ शिक्षकों की तकनीकी और शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने वाली विशेष रणनीतियाँ विकसित करने के लिए आवश्यक है, साथ ही एक सहायक संस्थागत संस्कृति को भी प्रोत्साहित करती है।

भविष्य में इन सैद्धांतिक जानकारीयों पर आधारित अनुभवजन्य अनुसंधान प्रभावी हस्तक्षेपों के डिजाइन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, जो मिश्रित शिक्षण के अपनाने और स्थायी उपयोग को बेहतर बनाएंगे। ऐसा अनुसंधान प्रशिक्षण की प्रभावशीलता, संस्थागत समर्थन, और भावनात्मक तत्परता जैसे कारकों का परीक्षण कर सकता है, जिससे निर्देशकीय गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए साक्ष्य-आधारित सुझाव मिल सकें। इसके अतिरिक्त, शिक्षक प्रशिक्षकों को आवश्यक कौशल, आत्मविश्वास, और मानसिकता प्रदान करना आवश्यक है ताकि वे 21वीं सदी के कक्षा-प्रबंधन की बदलती मांगों को सफलतापूर्वक पूरा कर सकें और समावेशी, आकर्षक, तथा तकनीकी-संवर्धित शिक्षा प्रदान कर सकें। अंततः, मिश्रित शिक्षण को अपनाने के सैद्धांतिक अन्वेषण से एक ऐसा मार्गदर्शक सिद्धांत प्राप्त होता है, जो शिक्षकों को सशक्त बनाने, शिक्षार्थियों के अनुभवों को समृद्ध करने, और हजारों जैसे क्षेत्रों में समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के व्यापक उद्देश्य में योगदान देने वाले परिवर्तनकारी शैक्षिक प्रथाओं के लिए दिशा प्रदान करता है।

संदर्भ

1. अजेन, आई. (1991). नियोजित व्यवहार का सिद्धांत। ऑर्गेनाइजेशनल बिहेवियर एंड ह्यूमन डिजिज प्रोसेसेस, 50(2), 179–211।
2. बांडुरा, ए. (1986). सोच और क्रिया की सामाजिक नींव एक सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत। प्रेंटिस-हॉल।
3. डेविस, एफ. डी. (1989). सूचना प्रौद्योगिकी की उपयोगिता की धारणा, उपयोग में आसानी की धारणा, और उपयोगकर्ता स्वीकृति। एमआईएस क्वार्टरली, 13(3), 319–340।
4. गैरेसन, डी. आर., – कणुका, एच. (2004). मिश्रित शिक्षण उच्च शिक्षा में इसके परिवर्तनकारी संभावनाओं का अनावरण। द इंटरनेट एंड हायर एजुकेशन, 7(2), 95–105।
5. ग्राहम, सी. आर. (2006). मिश्रित शिक्षण प्रणाली। सी. जे. बॉन्क – सी. आर. ग्राहम (संपादक), द हैंडबुक ऑफ ब्लेंडेड लर्निंग ग्लोबल पर्सपेक्टिव्स, लोकल डिजाइंस (पृ. 3–21)। फेफर पब्लिशिंग।
6. हरास्टिन्स्की, एस. (2019). हम मिश्रित शिक्षण से क्या मतलब लेते हैं? टेकट्रेंड्स, 63(5), 564–569।
7. जोनासेन, डी. एच. (1999). समस्याओं को हल करना सीखना एक शिक्षण डिजाइन मार्गदर्शिका। मेरिल।
8. मिश्रा, पी., – कोहलर, एम. जे. (2006). तकनीकी-शिक्षण सामग्री ज्ञान शिक्षक ज्ञान के लिए एक रूपरेखा। टीचर्स कॉलेज रिकॉर्ड, 108(6), 1017–1054।

9. मूर, एम. जी. (2013). लेन-देन दूरी का सिद्धांत। एम. जी. मूर (संपादक), हैंडबुक ऑफ डिस्टेंस एजुकेशन (3रा संस्करण, पृ. 66–85)। रूटलेज।
10. नालवाडे, एस. (2017). भारतीय उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षकों की मिश्रित शिक्षण स्वीकार्यता का अन्वेषण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी इन हायर एजुकेशन, 14(1), 1–15।
11. पार्क, एस. वाई. (2009). विश्वविद्यालय के छात्रों के ई-लर्निंग उपयोग के लिए तकनीकी स्वीकृति मॉडल का विश्लेषण। एजुकेशनल टेक्नोलॉजी एंड सोसाइटी, 12(3), 150–162।
12. पिक्कियानो, ए. जी. (2009). उद्देश्य के साथ मिश्रणरू मल्टीमोडल मॉडल। जर्नल ऑफ एसिंक्रोनस लर्निंग नेटवर्क्स, 13(1), 7–18।
13. पुएंटेदुरा, आर. आर. (2014). उन्नत अभ्यास का परिचय। हिपासस।
14. सालमन, जी. (2002). ई-मॉडरेटिंगरू ऑनलाइन पढ़ाने और सीखने की कुंजी। रूटलेज।
15. शंक, डी. एच. (2012). लर्निंग थ्योरीजरू एक शैक्षिक दृष्टिकोण (6ठा संस्करण)। पियरसन।
16. सिमेंस, जी. (2005). कनेक्टिविज़मरू डिजिटल युग के लिए एक शिक्षण सिद्धांत। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंस्ट्रक्शनल टेक्नोलॉजी एंड डिस्टेंस लर्निंग, 2(1), 3–10।
17. स्टाकर, एच., – हॉर्न, एम. बी. (2012). ज्ञ-12 मिश्रित शिक्षण का वर्गीकरण। इनोसाइट इंस्टिट्यूट।
18. वेंकटेश, वी., मॉरिस, एम. जी., डेविस, जी. बी., – डेविस, एफ. डी. (2003). सूचना प्रौद्योगिकी की उपयोगकर्ता स्वीकृतिरू एक एकीकृत दृष्टिकोण की ओर। एमआईएस क्वार्टरली, 27(3), 425–478।
19. वांग, एफ., – हन्नाफिन, एम. जे. (2005). डिजाइन-आधारित अनुसंधान और तकनीकी-संवर्धित शिक्षण वातावरण। एजुकेशनल टेक्नोलॉजी रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 53(4), 5–23।
20. झाओ, वाई., लेई, जे., यान, बी., टैन, एच. एस., – लाई, सी. (2005). क्या फर्क पड़ता है? दूरस्थ शिक्षा की प्रभावशीलता पर शोध का व्यावहारिक विश्लेषण। टीचर्स कॉलेज रिकॉर्ड, 107(8), 1836–1884।